(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. I, Jan-Mar ISSN: 2249-4642

DADABHAI NAOROJI

Dr. A. Mukta Vani

Associate Professor, Dept of Sanskrit, Hindi Mahavidyalaya

Hyderabad

दादाभाई नौरोजी

डॉ. ए. मुक्ता वाणी

असोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

4 सितम्बर 1825 का दिन इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा, क्योंकि इसी दिन भारत के तेजस्वी वीर पुत्र श्री दादाभाई नौरोजी का जन्म हुआ था, जिन्हें जनता ने हार्दिक श्रद्धा सहित प्यार दिया और भारत के वयोवृद्ध महापुरुष के नाम से पुकारने के साथ-साथ भारतीय राष्ट्रीयता का जन्मदाता और भारतीय स्वशासन का अग्रदूत माना। वे 'भारतवर्ष का महान् वृद्ध आदमी' कहलाने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। उन्हीं के शब्दों में - "जो बीज मेरे यौवन में बोचे गए थे, वे मेरे देशवासियों के प्रेम और आदर की महान् फसल के रूप में परिणत हो गये हैं। क्या यह मिथ्या है कि मैं भारतवर्ष का 'महान् वृद्ध पुरुष' कहलाने को एक महान् पुरस्कार मानता हूँ। इससे मेरे समस्त देशवासियों के मेरे प्रति विशाल और कृतज्ञतापूर्ण प्रेम का पता चलता है।"

भारत के वह वरद पुत्र थे। उनके पिता निर्धन पारसी पुरोहित थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम नौरोजी रखा। इस नाम में ही मानो उनका महान् सौभाग्य समाहित था। उनके पूर्वज 600 वर्षों से पुरोहित का कार्य करते आये, किन्तु उन्होंने परम्परागत ढंग की पुरोहिताई न करके भारतीय राष्ट्रीयता का पुजारी पद ग्रहण किया ।

प्रो. आर्लेबार ने उन्हें 'भारत की आशा' कहा था। उन्हें प्रथम भारतीय प्राध्यापक होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने सर्वप्रथम भारतीय जनता के सामाजिक, बौद्धिक और राजनीतिक विकास के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की। वे ऐसे महान् व्यक्ति थे, जिन्होंने लगभग एक शताब्दी तक दुनियाँ में सरलता, पवित्रता और दयालुता का महान् जीवन व्यतीत किया था। वैधानिक योद्धा दादाभाई अनेक निराशाओं के बाद भी उद्देश्य, सिद्धान्त, नीति या कार्य प्रणाली के साथ दृढ़तापूर्वक राजनीति में भाग ले रहे थे। उनमें मातृभूमि के लिए त्याग की

IJRSSH

उत्कृष्ट उत्कण्ठा थी. जो उनके हृदय में निरन्तर जला करती थी। यह ज्योति न कभी मन्द हुई और न कभी टिमटिमाई। अंग्रेज़ भी स्वभावतः उनके प्रति आकर्षित होते रहे। उनकी सच्चाई एवं स्पष्टवादिता की प्रशंसा करते रहे। दादाभाई नौरोजी प्रथम भारतीय थे जिन्हें ब्रिटिश पार्लमेण्ट के सदस्य होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने वहाँ भारतीयों के जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए जो कार्य किया वह अद्‌भुत और अभूतपूर्व था । जिसके कारण वे भारत के महान् नेता बन गये ।

श्री दादाभाई नौरोजी इण्डियन नेशनल काँग्रेस के सर्वोच्च सभापति पद पर तीनवार चुनकर अलंकृत हुए। कलकत्ता में कॉग्रेस के मंच से अध्यक्षीय भाषण देते हुए उन्होंने कहा था "समस्त भारतवासियों का उद्देश्य स्वराज की प्राप्ति होना चाहिए। हिन्दू और मुसलमान दोनों भारतमाता की दो आँखें हैं। समस्त भारतवासियों को राजनीति के क्षेत्र में सब भेद भुलाकर मिलजुल कर कार्य करना चाहिए ।"

दादाभाई नौरोजी के भाषण ओज, तर्कपूर्ण एवं युक्तियुक्त होते थे। उनका हृदय भारतदेश की पराधीनता, निर्धनता को देख द्रवीभूत होता था। उन्होंने ब्रिटिश लोकसभा में भारत की स्थिति का यथोचित चित्र प्रस्तुत कर भारत के सच्चे प्रतिनिधि के दायित्व का निर्वहण निर्भयता से किया। जिससे उनकी लोकप्रियता विश्वभर में फैल गई।

दादाभाई नौरोजी शिक्षाप्रेमी थे। जिसका श्रेय उनकी माताश्री को जाता है। वे स्वयं साधन सम्पन्न न होने पर भी अपने बेटे की शिक्षा हेतु पूर्ण प्रबन्ध करती रहीं। दादाभाई नौरोजी सदा कहते थे "मैं जो भी कुछ हूँ अपनी माता के द्वारा बनाया गया हूँ।" शिक्षा के विषय में उनके विचार थे "शिक्षा सर्वथा निःशुल्क होनी चाहिए जिससे अमीर और गरीब दोनों उसका लाभ उठा सकें ।"

दादाभाई नौरोजी कुशाग्रबुद्धिवाले परिश्रमी छात्र थे। छात्रावस्था में उनकी प्रतिभा को अनेक पुरस्कारों से सुशोभित किया गया। पहले वे एक विद्यालय में कार्यरत थे। तदनन्तर एकफिन्सन कॉलेज में गणित के प्रोफेसर पद पर कार्य किये। वे अध्यापन के साथ-साथ सामाजिक सेवा से भी जुड़े रहे। जिस समय कन्याओं की शिक्षा का घोर विरोध था ऐसे प्रतिकूल वातावरण में उन्होंने बम्बई में कन्याओं के लिए विशेष विद्यालय का शुभारम्भ किया। उन्होंने साहित्यिक अनेक नवीन एवं वैज्ञानिक संस्थाओं का निर्माण भी किया। श्री दादाभाई नौरोजी ने 1851 में गुजराती भाषा में 'सत्यवादी' नाम से साप्ताहिक पत्रिका निकाला और दो वर्षों तक इसका सम्पादन करते हुए गुजराती साहित्य को सुसमृद्ध किया। बाद में वे लन्दन स्थित यूनिवर्सिटी कॉलेज में प्रोफेसर (गुजराती) नियुक्त किये गये। कुछ वर्षों के अन्तराल में उन्होंने स्वरचित पुस्तक प्रकाशित की 'दी पार्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूप

इन इण्डिया' अर्थात् भारतवर्ष में दरिद्रता और उस पर ब्रिटिश सिद्धान्तों के विरुद्ध शासन ।

"पारसी होते हुए भी दादाभाई नौरोजी ने कभी अपने आप को एकमात्र पारसी नहीं समझा। वे स्वयं को भारतीय समझते थे और भारतवर्ष की हर एक जातिवाले उनको अपना ही एक अभिन्न अंग समझते थे । दादाभाई नौरोजी के कारण पारसियों में सर फिरोज शाह मेहता और नरीमैन आदि महान् पुरुप उत्पन्न हुए जिन्होंने उनके चरण चिह्नों पर चलकर मातृभूमि की ऐसी महान् सेवा की जो भारतवर्ष के समस्त लोगों के लिए सदा प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करती रहेगी ।" -अमर जीवनियाँ

सन् 1916 में बम्बई विश्वविद्यालय ने दादा भाई को 'डॉक्टर आफ लॉ' की सम्मानित उपाधि दी। सुधार आन्दोलन के प्रणेता दादाभाई अपनी त्यागपूर्ण सेवा के कारण इंग्लैण्ड में भारत के गैर सरकारी राजदूत के रूप में माने जाते थे। इसलिए अनेक व्यक्ति और संस्थाएँ उनके पास सहायता के लिए अपीलें भेजती और सलाह लेती थीं। दादाभाई के पत्र-व्यवहार और प्रचार से इस बात का आभास मिलता है कि उनके मन में देशप्रेम और मातृभूमि को दासता से मुक्त कराने की सफल योजना थी ।

दादाभाई की सार्वजनिक कार्य सम्बन्धी आलोचनाओं में व्यंग्य रहता था। वे अंग्रेज पदाधिकारियों के दर्प और उदासीनता की कड़ी और निर्मम आलोचना करते थे। गहन एकाग्रता, स्फटिक सदृश सहृदयता, मधुर न्यायप्रियता एवं विनम्रता के कारण उनके व्याख्यानों में अनोखी रोचकता होती थी। उनके देशप्रेम से ओतप्रोत व्याख्यान को सुनकर उपस्थित श्रोता मण्डली गद्‌गद् हो जाती थी। उस सन्त के मुखारविन्द से भारत की अनेक समस्याओं की चर्चा सुनकर कृतकृत्य होती थी। उनके जीवन के अन्तिम दस वर्षों में उनका निवास स्थान सभी जातियों की शिक्षित और सुसंस्कृत महिलाओं का तीर्थ स्थान बन गया था।

एक पत्र प्रतिनिधि ने दादाभाई से वृद्धावस्था में भी स्वस्थ रहने का रहस्य पूछते हुए कहा- आप अपने अच्छे स्वास्थ्य का श्रेय किसे देंगे? तो दादा ने उत्तर दिया संयम से रहने, तम्बाकू न पीना, मसाले तथा चाट-चटनी न खाना और मेहनत करना। उनके जन्म-दिवस पर 'इंडिया' नामक पत्रिका में एक कविता प्रकाशित हुई -

"फसल तैयार है, जिसके बीज तुम ने कभी बोए थे,

कामना है कि तुम्हारी जीवन नौका अभी और चले,

तुम्हारी आशाएँ कभी निष्फल नहीं हुई

अब अस्सी और एक साल में भी तुम आशावादी हो ।

तुम्हारे मन और मस्तिष्क में कोई अन्तर नहीं आया,

भले ही तुम लाँघ चुके हो अनेक वर्षों की सीमा ।

ओ! भारत के महान् युगपुरुष ।

कामना हमारी है, सौ साल जियो तुम ।।

इस प्रकार आशाश्री के दीपक श्री दादाभाई नौरोजी का अनुकरणीय जीवन और चरित्र की कहानी से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। उनके द्वारा किये गये राष्ट्रनिर्माण के चिरस्मरणीय कार्य एवं स्वराज्य के लिए उनका आजीवन संघर्ष विश्व इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा ।

IJRSSH